

पाण्डुलिपि संरक्षण, संवर्धन और सम्पादन

- डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़, सागर

(राष्ट्रपति सम्मानित)

संयुक्त मंत्री, अ.भा.दि. जैन शास्त्र परिषद्

प्रस्तावना - भारत ज्ञान का भण्डार है। ज्ञान की अविरल धारा प्राचीन काल से ही निःसृत हुई है। जब बौद्धिक रूप से लोग बहुत अधिक प्रखर थे तब ज्ञान एक से दूसरे में और दूसरे से तीसरे में बिना लिखे ही पहुँचता था। परंतु जब बुद्धि का क्षयोपशम कम हुआ और ऋषि-मुनियों को लगा कि भारत की भूमि पर ज्ञान की इस अविरल धारा को बहाने के लिए लेखन आवश्यक है, तब उन्होंने लिखना प्रारंभ किया। वह लेखन आज हमारे राष्ट्र की धरोहर है और विश्व के लिए मार्गदर्शक है। यहाँ इस लेख में हम पाण्डुलिपि के संरक्षण और संवर्धन पर चर्चा कर रहे हैं। जिसमें निहित ज्ञान-विज्ञान राष्ट्र की समृद्धि अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान निभा रही है। पाण्डुलिपि कागज, छाल, धातु, ताड़ के पत्ते या किसी अन्य सामग्री पर लिखी गई हस्तलिखित प्रति है। पाण्डुलिपियाँ कई भाषाओं और लिपियों में पाई जाती हैं। पाण्डुलिपियाँ ऐतिहासिक रिकॉर्डों जैसे शिलालेखों, आदेशों, राजस्व अभिलेखों से अलग होती हैं। भारत के पास दस मिलियन पाण्डुलिपियों का अनुमान है।



पाण्डुलिपि शब्द का अर्थ - पाण्डुलिपि दो शब्दों से मिलकर बना है। पाण्डु+लिपि। जिसमें पाण्डु का अर्थ है - पीला या हल्के रंग का (पुराने कागज या पत्तों का रंग) और लिपि का अर्थ लेखन। इस प्रकार पाण्डुलिपि शब्द का अर्थ होता है हल्के रंग के कागज या पत्तों पर हस्तलिखित लेखन। पाण्डुलिपि, हाथ से लिखा गया दस्तावेज़ होता है। इसे हस्तप्रति, लिपिग्रंथ, हस्तलेख, हस्तलिपि, या मातृकाग्रंथ भी कहा जाता है। अंग्रेज़ी में इसे मैनुस्क्रिप्ट (Manuscript) कहते हैं।

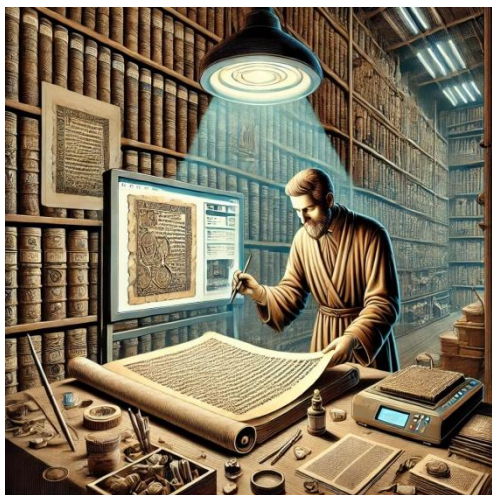
पाण्डुलिपि से तात्पर्य - पाण्डुलिपि से तात्पर्य है हस्तलिखित ग्रंथ या लेख, जो कागज, ताड़पत्र, भौमपत्र, या अन्य किसी सामग्री पर लिखे जाते थे। यह प्राचीन काल में लेखन का प्रमुख माध्यम था, जब मुद्रण तकनीक उपलब्ध नहीं थी। पाण्डुलिपियों में ऐतिहासिक, धार्मिक, साहित्यिक और वैज्ञानिक आदि का ज्ञान भण्डार निहित है। प्रायःकर पाण्डुलिपियाँ देवनागरी, नागर, ब्राह्मी, द्राविड आदि में लिपियों में प्राप्त होती हैं। इनकी भाषा संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, कन्नड़, तमिल, मराठी

आदि है। सर्वाधिक पाण्डुलिपियाँ श्रमण संस्कृति और वैदिक संस्कृति की प्राप्त हुई हैं, जिस पर निरंतर शोध कार्य चल रहा है। इन सभी पाण्डुलिपियों में ज्ञान-विज्ञान-कला-धर्म-इतिहास-साहित्य आदि के विविध विषयों का समावेश है, जो कि किसी भी राष्ट्र को समृद्ध बनाने के लिए पर्याप्त है।

प्रत्येक जड़ पदार्थ की आयुसीमा है। अपनी आयुसीमा पूरी करते ही साथ मिट्टी में मिल जाता है। उसकी वह पर्याय समाप्त हो जाती है। ऐसे में, क्षरण और नष्ट होने वाली पाण्डुलिपियों को संभालना और संरक्षण-संवर्धन करना, हमारा परम कर्तव्य हो जाता है। इसलिए, इनका संरक्षण और संवर्धन न केवल अतीत से जुड़े रहने का माध्यम है, बल्कि आने वाली पीढ़ियों को उनके समृद्ध इतिहास से परिचित कराने का प्रयास भी है।

✚ पाण्डुलिपियों का महत्व -

1. ज्ञान का भंडार: - पाण्डुलिपियाँ में श्रमण संस्कृति और वैदिक संस्कृति का साहित्य, आयुर्वेद, ज्योतिष, गणित, वास्तुकला और धर्मग्रंथों का अपार भंडार है।



2. संस्कृति और परंपरा: - यह हमारी संस्कृति, परंपराओं और भाषाओं का सजीव चित्रण करती हैं।

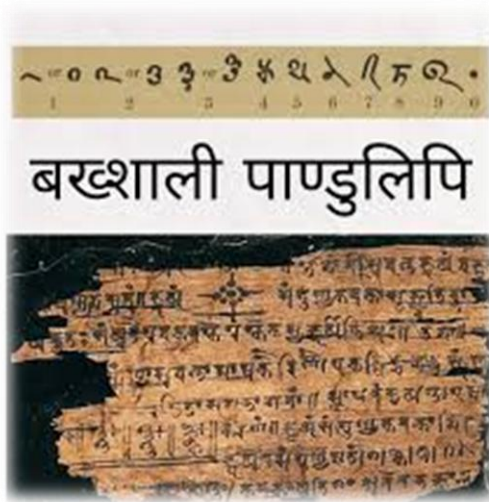
3. इतिहास की झलक: - इनमें ऐतिहासिक घटनाओं, साम्राज्यों और समाज की झलक मिलती है।

4. भाषाओं का विकास - विविध भाषाओं में पाण्डुलिपियाँ उपलब्ध हैं। ये इस बात की प्रमाण है कि भाषाओं की समृद्धि के लिए इन पाण्डुलिपियों का अध्ययन-अध्यापन परम आवश्यक

है।

5. शिक्षा का विकास - गुरुकुल परम्परा में शिक्षा के महत्वपूर्ण आयामों की जानकारी प्राप्त होती है, शिक्षा के विविध स्वरूपों और कौशलों का परिज्ञान होता है।

✚ **संरक्षण के उपाय** - पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखना और उनका नियमित रूप से देखभाल करना तथा संरक्षण करने के लिए विविध उपाय निम्नलिखित हैं, जिन्हें समझकर इस कार्य को विधिपूर्वक करना चाहिए।



1. भौतिक संरक्षण:

- पाण्डुलिपियों को आदर्श तापमान (20-25°C) और आर्द्रता (50-60%) वाले वातावरण में रखा जाना चाहिए।
- नमी और कीटों से बचाने के लिए इन्हें विशेष रसायनों और संपीड़ित कागज (Compressed Paper) एक विशेष प्रकार का कागज है, जो उच्च दबाव और गर्मी के उपयोग से तैयार किया जाता है) में संरक्षित किया जाता है।
- प्रकाश से बचाने के लिए इन्हें अंधेरे या नियंत्रित रोशनी वाले स्थान पर रखा जाना चाहिए।

2. डिजिटलीकरण: पाण्डुलिपियों को स्कैन करके डिजिटल प्रारूप में संग्रहित करना आधुनिक तकनीक का महत्वपूर्ण उपयोग है। इससे न केवल इनकी सुरक्षा सुनिश्चित होती है, बल्कि इन्हें आसानी से शोधकर्ताओं और छात्रों तक पहुँचाया जा सकता है।

3. रसायनिक उपचार: क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों की मरम्मत के लिए विशेष रसायनिक उपचार और पुनर्निर्माण तकनीकों का उपयोग किया जाता है। रसायनिक उपचार के माध्यम से पाण्डुलिपियाँ सुरक्षित और संरक्षित होती हैं।

4. शोध और अध्ययन: -

- पाण्डुलिपियों पर शोध करके इनमें छिपे ज्ञान को समझना और उसका उपयोग करना इनका संवर्धन सुनिश्चित करता है।
- पाण्डुलिपियों के अनुवाद और व्याख्या से उनकी पहुंच व्यापक हो सकती है।
- पाण्डुलिपि को पढ़ने की विधि होती है, इस विधि को विशेषज्ञों से सीखना चाहिए, फिर पाण्डुलिपियों का अध्ययन करना चाहिए, जिससे पाण्डुलिपि का अनुवाद, व्याख्या या सरलीकरण आसानी से किया जा सके।

✚ संवर्धन के प्रयास -

1. सरकारी और गैर-सरकारी संस्थाएँ:

- राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (भारत) जैसी संस्थाएँ संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रयासरत हैं।

- विभिन्न विश्वविद्यालय और शोध संस्थान भी इस दिशा में सक्रिय हैं।

2. सामाजिक जागरूकता:

- आम जनता और छात्रों में पांडुलिपियों के महत्व के प्रति जागरूकता बढ़ाना आवश्यक है।
- संग्रहालयों और प्रदर्शनियों के माध्यम से इनका प्रचार-प्रसार किया जा सकता है।

3. अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:

विभिन्न देशों और संस्थानों के साथ मिलकर संरक्षण तकनीकों का आदान-प्रदान किया जा सकता है।

भारत में पांडुलिपियों के संरक्षण और संवर्धन के लिए भारत सरकार एवं राज्य सरकारें अनेक योजनाएँ संचालित कर रही है और कुछ स्वयंसेवी संस्थाएँ भी कार्य कर रही है। इनमें प्राचीन धरोहरों को सुरक्षित रखने, डिजिटलीकरण और शोध को प्रोत्साहित करने पर ध्यान दिया जा रहा है। हम यहाँ कुछ ऐसी ही योजनाओं और संस्थाओं की जानकारी साँझा कर रहे हैं -



- ✚ **राष्ट्रीय पांडुलिपि मिशन (NMM)** - 2003 में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा स्थापित यह मिशन पांडुलिपियों को संरक्षित करने और उनके डिजिटलीकरण के लिए प्रमुख संस्था है। इसका लक्ष्य पांडुलिपियों का संग्रह, संवर्धन, डिजिटलीकरण और उपलब्धता करना और कराना है। यह मिशन मानविकी, विज्ञान, कला, और धर्म के क्षेत्र में भारत की अमूल्य ज्ञान-परंपरा को संरक्षित करने के लिए कार्य करता है। पाण्डुलिपियों पर कार्य करने के लिए अनेक संस्थाओं को यह अनुदान राशि भी प्रदान करती है।

गतिविधियाँ:

1. पाण्डुलिपि संरक्षण केंद्र (MRCs): देशभर में 48 केंद्र स्थापित हैं।
2. डिजिटलीकरण: लाखों पाण्डुलिपियों को डिजिटल स्वरूप में संरक्षित किया गया है।
3. कार्यशालाएँ और प्रशिक्षण: संरक्षण तकनीकों और पाण्डुलिपियों के अध्ययन के लिए प्रशिक्षण।

राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (NMM) 11, Mansingh Road, New Delhi, Delhi 110001 इस पते पर सम्पर्क करके हम पाण्डुलिपियों के संरक्षण-संवर्धन के लिए अनेक कार्य योजनाओं को समझ सकते हैं और अनुदान भी प्राप्त कर सकते हैं। <https://www.namami.gov.in/> यह इसकी अधिकृत वेबसाइट भी है।

✚ अनुदान और योजनाएँ

1. संस्कृति मंत्रालय के अनुदान: पाण्डुलिपियों के भंडारण, संरक्षण, और प्रदर्शन के लिए वित्तीय सहायता।
2. राष्ट्रीय पुस्तकालय, कोलकाता: पाण्डुलिपियों के अध्ययन और शोध के लिए वित्त पोषण।
3. यूनेस्को और अंतर्राष्ट्रीय संस्थाएँ: जैन, बौद्ध और अन्य दुर्लभ पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए सहयोग।

✚ विशेष कदम -

1. राष्ट्रीय संग्रहालय और आर्काइव्स: पाण्डुलिपियों को संरक्षित रखने के लिए आधुनिक तकनीकों का उपयोग।
2. पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग (ASI): ऐतिहासिक पाण्डुलिपियों की मरम्मत और संरक्षण।
3. डिजिटलीकरण योजनाएँ: डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया और NDL जैसे प्रयास।

✚ **जागरूकता अभियान** - भारत सरकार का संस्कृति मंत्रालय और शिक्षा मंत्रालय शोधकर्ताओं, छात्रों और संस्थानों को पाण्डुलिपियों के महत्व को समझाने के लिए जागरूकता अभियान चला रही है, जिससे पाण्डुलिपियों पर लोग आसानी से कार्य कर सकें। इससे हमारी धरोहरें तो सुरक्षित होती ही है, साथ-साथ इसे वैश्विक स्तर पर प्रदर्शित करने में भी सहायक हैं।

पाण्डुलिपि संरक्षण एवं संवर्धन के लिए किए गए कार्य - पाण्डुलिपियों के संरक्षण और संवर्धन के क्षेत्र में प्राचीन काल से लेकर आधुनिक समय तक कई महत्वपूर्ण कार्य किए गए हैं। इनमें उनके संकलन, अध्ययन, डिजिटलीकरण, और शोध को बढ़ावा देने के प्रयास शामिल हैं। इसे हम तीन प्रकार से विभाजित करेंगे - 1. प्राचीन काल में कार्य, 2. मध्यकाल में कार्य 3. वर्तमान काल में कार्य

1. प्राचीन काल में कार्य

1. भण्डारों की स्थापना: -

- प्राचीन मंदिरों, मठों, विद्यालयों, विश्वविद्यालयों और पुस्तकालयों में पाण्डुलिपियों का संग्रह किया गया, जैसे नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय आदि।
- जैन और बौद्ध भिक्षुओं ने पाण्डुलिपियों का संरक्षण और पुनर्लेखन किया।

2. लिखने और संरक्षित करने की तकनीक:

- ताड़पत्र, भोजपत्र और कपास के कागज़ पर विशेष स्याही का उपयोग किया गया।
- पाण्डुलिपियों को सुरक्षित रखने के लिए प्राकृतिक रसायनों का उपयोग किया जाता था।

2. मध्यकालीन और औपनिवेशिक काल

1. भंडारों का विस्तार: - राजस्थान, गुजरात और दक्षिण भारत के जैन ग्रंथ भंडारों में पाण्डुलिपियाँ संरक्षित की गईं।

2. विदेशी संग्रहालयों में स्थानांतरण: - औपनिवेशिक काल में कई पाण्डुलिपियाँ ब्रिटेन, जर्मनी और अन्य यूरोपीय देशों में ले जाई गईं।

3. शोध और अनुवाद: - विलियम जोन्स और मैक्स मूलर जैसे विद्वानों ने भारतीय पाण्डुलिपियों का अनुवाद और अध्ययन किया।

3. आधुनिक युग में कार्य -

1. राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (2003): भारत सरकार ने इस मिशन की स्थापना की। अब तक लाखों पाण्डुलिपियाँ डिजिटलीकृत और संरक्षित की गई हैं।

2. **डिजिटलीकरण:** - डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ इंडिया (DLI) और राष्ट्रीय डिजिटल लाइब्रेरी (NDL) ने दुर्लभ पाण्डुलिपियों को ऑनलाइन उपलब्ध कराया।

3. **संरक्षण तकनीक:** - विशेष रसायनिक उपचार और आधुनिक उपकरणों के उपयोग से क्षतिग्रस्त पाण्डुलिपियों की मरम्मत की जा रही है।

विशेष शोध संस्थान और संग्रहालय

1. **लालभाई दलपतभाई संस्थान, अहमदाबाद और जैसलमेर ज्ञान भंडार** जैसे संस्थानों में बड़े पैमाने पर पाण्डुलिपियों का संरक्षण।
2. **अनेकान्त ज्ञान मंदिर, बीना सागर म.प्र.** - यह केन्द्र ब्र. संदीप भैया सरल द्वारा स्थापित किया गया है। यहाँ पर कई हजार पाण्डुलिपियाँ हैं।
3. **राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन (National Mission for Manuscripts)** - नई दिल्ली स्थित यह केंद्र पाण्डुलिपियों के संरक्षण और डिजिटलीकरण का कार्य करता है।
4. **सारस्वत महल लाइब्रेरी** - तंजावुर, तमिलनाडु में स्थित, यह भारत के सबसे पुराने पाण्डुलिपि संग्रहालयों में से एक है।
5. **ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट** - मैसूर, कर्नाटक में स्थित, यह केंद्र प्राचीन ग्रंथों और पाण्डुलिपियों के संरक्षण के लिए प्रसिद्ध है।
6. **बोधन संस्थान** - पुणे, महाराष्ट्र में स्थित यह केंद्र भारतीय संस्कृति और पाण्डुलिपि अध्ययन में कार्यरत है।
7. **काशी हिन्दू विश्वविद्यालय (BHU)** - वाराणसी स्थित, यहाँ प्राचीन पाण्डुलिपियों का विशाल संग्रह है।
8. **खुदाबख्श ओरिएंटल लाइब्रेरी** - पटना, बिहार: इस लाइब्रेरी में दुर्लभ पाण्डुलिपियों और इस्लामी साहित्य का विशाल संग्रह है।
9. **रामकृष्ण मिशन इंस्टीट्यूट ऑफ कल्चर** - कोलकाता, पश्चिम बंगाल: यहाँ प्राचीन ग्रंथों और पाण्डुलिपियों का संरक्षण किया जाता है।
10. **भंडारकर ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट** - पुणे, महाराष्ट्र: यह वेद, स्मृतियाँ और पुराणों पर केंद्रित प्राचीन पाण्डुलिपियों का प्रमुख केंद्र है।
11. **सिंधिया ओरिएंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट** - उज्जैन, मध्य प्रदेश: यह केंद्र ज्योतिष और अन्य शास्त्रों से संबंधित पाण्डुलिपियों का संग्रह करता है।

12. **ओरिएंटल लाइब्रेरी - चेन्नई, तमिलनाडु:** यहाँ भारतीय दर्शन, धर्म और साहित्य से संबंधित पाण्डुलिपियाँ संरक्षित हैं।
13. **जैन ज्ञानपीठ - जयपुर, राजस्थान:** यह केंद्र जैन धर्म से संबंधित पाण्डुलिपियों और ग्रंथों के संरक्षण और प्रकाशन का कार्य करता है।
14. **पार्श्वनाथ विद्यापीठ - वाराणसी, उत्तर प्रदेश:** यहाँ जैन धर्मशास्त्र, इतिहास और पाण्डुलिपियों का संरक्षण और अध्ययन किया जाता है।
15. **रज्जबाई टॉवर लाइब्रेरी - मुंबई, महाराष्ट्र:** इस केंद्र में जैन ग्रंथों और दुर्लभ पाण्डुलिपियों का महत्वपूर्ण संग्रह है।
16. **श्रुत संवर्द्धन प्रतिष्ठान - पुणे, महाराष्ट्र:** यह केंद्र जैन पाण्डुलिपियों के डिजिटलीकरण और संरक्षण के लिए समर्पित है।
17. **जैन शास्त्र भंडार - पटनी, राजस्थान:** यह केंद्र प्राचीन जैन पाण्डुलिपियों और ग्रंथों के संग्रह के लिए प्रसिद्ध है।
18. **हस्तलिखित ग्रंथालय - सांगानेर, जयपुर, राजस्थान:** यहाँ जैन धर्म से संबंधित दुर्लभ हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का संग्रह और संरक्षण किया जाता है।
19. **जैन हस्तलिखित पुस्तकालय - पाली, राजस्थान:** यह केंद्र हजारों जैन पाण्डुलिपियों का एक प्रमुख भंडार है।
20. **श्री महावीर जैन अर्जुन ग्रंथमाला - भावनगर, गुजरात:** यह संस्था जैन ग्रंथों के प्रकाशन और पाण्डुलिपियों के संरक्षण का कार्य करती है।
21. **दर्शन संग्रहालय - मूडबिद्री, कर्नाटक:** इसे जैन काशी कहा जाता है, और यहाँ प्राचीन जैन ग्रंथ, ताड़पत्र पाण्डुलिपियाँ और धर्मशास्त्र संरक्षित हैं।
22. **जैन शास्त्र भंडार - अजमेर, राजस्थान:** यह केंद्र दुर्लभ जैन पाण्डुलिपियों और ग्रंथों का संरक्षण करता है।
23. **श्री अजीतनाथ जैन मंदिर पाण्डुलिपि संग्रहालय - बड़नगर, मध्य प्रदेश:** यहाँ ताड़पत्रों पर लिखी प्राचीन जैन पाण्डुलिपियाँ संरक्षित हैं।
24. **पालिताना शास्त्र भंडार - पालिताना, गुजरात:** जैन तीर्थ स्थल के पास स्थित, यह भंडार जैन धर्म से जुड़े ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह है।
25. **जैन ग्रंथालय - बीकानेर, राजस्थान:** यहाँ विभिन्न जैन ग्रंथों और हस्तलिखित पाण्डुलिपियों का संग्रह किया गया है।
26. **श्री हेमचंद्राचार्य जैन ज्ञान मंदिर - पाटन, गुजरात:** यह केंद्र जैन पाण्डुलिपियों के संरक्षण और अध्ययन में अग्रणी है।

27. **श्री महावीर संग्रहालय** - दिल्ली: यहाँ जैन धर्म से संबंधित पाण्डुलिपियों , मूर्तियों और ग्रंथों का संग्रह किया जाता है।
28. **जैन पुस्तकालय** - श्रीनगर, जम्मू और कश्मीर : यह केंद्र जैन धर्म के इतिहास , दर्शन और साहित्य से संबंधित पाण्डुलिपियों का संरक्षण करता है।
29. **दिगंबर जैन पाण्डुलिपि संग्रहालय** - दिल्ली: यह संग्रहालय प्राचीन जैन पाण्डुलिपियों और ग्रंथों का महत्वपूर्ण संग्रह स्थल है।
30. **राजस्थानी पाण्डुलिपि संग्रहालय** - जोधपुर, राजस्थान: यहाँ जैन धर्म से संबंधित पाण्डुलिपियों और अन्य धार्मिक ग्रंथों का संग्रह किया जाता है।
31. **श्रुत संग्रहालय** - उदयपुर, राजस्थान: यह संग्रहालय जैन धर्म के प्रमुख ग्रंथों और पाण्डुलिपियों का भंडार है, जिसमें प्राचीन ताड़पत्र पाण्डुलिपियाँ भी शामिल हैं।
32. **श्री महावीर जैन पाण्डुलिपि संग्रहालय** - मुंबई, महाराष्ट्र: यहाँ जैन पाण्डुलिपियों , ताड़पत्रों और ग्रंथों का बड़ा संग्रह है।
33. **जैन धर्मशास्त्र संग्रहालय** - सूरत, गुजरात: यह संग्रहालय जैन साहित्य और पाण्डुलिपियों का महत्वपूर्ण भंडार है।
34. **श्री पार्श्वनाथ पाण्डुलिपि संग्रहालय** - पटना, बिहार: यहाँ जैन धर्म से संबंधित पुरानी पाण्डुलिपियों और ग्रंथों का संरक्षण किया जाता है।
35. **अहमदाबाद जैन पुस्तकालय** - अहमदाबाद, गुजरात: यह पुस्तकालय जैन धर्म के ग्रंथों और पाण्डुलिपियों का संग्रह और अध्ययन करता है।
36. **राष्ट्रपति भवन संग्रहालय दिल्ली** - यहाँ भारतीय पाण्डुलिपियों सहित जैन पाण्डुलिपियाँ भी संरक्षित हैं।
37. **श्रवणबेलगोला** - कर्नाटक के श्रवणबेलगोला और महाराष्ट्र के अजितनाथ मंदिरों में प्राचीन पाण्डुलिपियाँ संरक्षित हैं।

विशेषताएं -

- अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारत के बाहर कई संस्थान, जैसे ब्रिटिश लाइब्रेरी और लाइब्रेरी ऑफ कांग्रेस, भारतीय पाण्डुलिपियों पर शोध कर रहे हैं।
- समकालीन कार्य दृष्टि से ज्ञात होता है कि शोध पत्र और अनुवाद के माध्यम से विभिन्न विश्वविद्यालयों में जैन, बौद्ध और वैदिक पाण्डुलिपियों पर शोध हो रहा है।
- सामाजिक जागरूकता की दृष्टि से पाण्डुलिपियों की महत्ता को समझाने के लिए कार्यशालाएँ, प्रदर्शनियाँ, और संगोष्ठियाँ आयोजित की जा रही हैं।
- पाण्डुलिपियों पर हुए इन कार्यों ने भारतीय संस्कृति और इतिहास को सहेजने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

✚ **पाण्डुलिपि सम्पादन के अध्ययन संबंधी आवश्यक कार्य** - पाण्डुलिपि सम्पादन (Manuscript Editing) सावधानी पूर्वक की जाने वाली प्रक्रिया है। मात्र भाषा का ज्ञान होना, विषय का ज्ञान होना पर्याप्त नहीं होता है। इसके लिए हमें लिपि को जानना और समझना भी आवश्यक होता है क्योंकि जितनी प्राचीन पाण्डुलिपि होगी उसकी लिपि में उतना अधिक परिवर्तन मिलेगा, अक्षरों की बनावट में यह परिवर्तन प्रायः कर स्पष्टतया प्रतीत होता है। इसलिए पाण्डुलिपि सम्पादन के अध्ययन के लिए निम्न बिन्दुओं का जानना आवश्यक है -

✚ **पाण्डुलिपि सम्पादन की विधि** - पाण्डुलिपि सम्पादन के लिए आवश्यक है कि उसमें प्रवेश करने के पूर्व उसकी विधि को समझ लिया जाए। जितनी पुरानी पाण्डुलिपि होगी अक्षरों की बनावट में भी उतना परिवर्तन मिलेगा। इसलिए हमें सम्पादन के पूर्व विशेषज्ञों से इस विधि को समझना चाहिए तत्पश्चात् पाण्डुलिपि सम्पादन के कार्य को शुरू करना चाहिए। फिर कुछ विधियाँ यहाँ लिख रहे हैं -

पाण्डुलिपि की जाँच और विश्लेषण: -

- पाण्डुलिपि का नाम, विषयवस्तु, किससे संबंधित है, कहाँ से प्राप्त है, किस संवत् की है आदि-आदि की जाँच की जाती है।
- इसके पश्चात् पाण्डुलिपि को सावधानी से पढ़ा जाता है और उसकी सामग्री, भाषा, शैली और लेखनी का विश्लेषण किया जाता है।
- तत्पश्चात् पाण्डुलिपि की शुद्धता और समीचीन को जांचने के लिए अन्य उपलब्ध संस्करणों से उसकी तुलना की जाती है।
- इसके बाद पाण्डुलिपि के लेखन का कार्य, अनुवाद का कार्य या व्याख्या का कार्य प्रारंभ किया जाता है।

पाठ का पुनः निर्माण (Text Reconstruction):

- यदि पाण्डुलिपि में कोई भाग मिट गया हो या अस्पष्ट हो, तो अन्य स्रोतों, टिप्पणियों और संदर्भों का उपयोग करके उसे पुनः स्थापित किया जाता है।
- सही शब्दों, वाक्यांशों और वाक्य संरचनाओं को पहचानने के लिए भाषा विज्ञान का भी उपयोग किया जाता है।

शुद्धता और संकलन (Proofreading and Compilation):

- पाण्डुलिपि के सभी भागों की शुद्धता सुनिश्चित की जाती है और गलतियाँ (जैसे टाइपिंग, व्याकरण या भाषा संबंधी) सुधारी जाती हैं।
- इस चरण में पाण्डुलिपि का विभिन्न संस्करणों से मिलान किया जाता है।

संपादन और टिप्पणियाँ (Editing and Commentary):

- सम्पादक पाण्डुलिपि में किसी भी अस्पष्टता को स्पष्ट करते हैं, और यदि आवश्यक हो, तो टिप्पणियाँ या संदर्भ जोड़ते हैं।
- लेखन की शैली को सामान्य जनों के लिए अधिक सुलभ और समझने योग्य बनाने के लिए परिवर्तन किए जाते हैं।

प्रकाशन हेतु तैयार करना (Preparing for Publication):

- अंतिम संपादित पाण्डुलिपि को प्रकाशित करने के लिए तैयार किया जाता है, जिसमें मुद्रण के लिए सही स्वरूप और फॉर्मेटिंग शामिल होता है।
- यदि आवश्यक हो, तो पाण्डुलिपि का अनुवाद भी किया जाता है।

यह प्रक्रिया पाण्डुलिपियों की ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और धार्मिक मूल्य को संरक्षित करने के लिए आवश्यक है और यह सुनिश्चित करती है कि प्राचीन ग्रंथों का सही रूप में अध्ययन और प्रचार-प्रसार हो सके।

- ✚ **पाण्डुलिपि सम्पादन में आने वाली कठिनाइयाँ -** पाण्डुलिपि सम्पादन की प्रक्रिया अत्यंत कठिन है। इसमें सावधानी और सजगता बहुत आवश्यक है। पाण्डुलिपियों की प्राचीनता, उनकी भौतिक स्थिति, और भाषा संबंधी समस्याओं प्रमुखता से सम्पादन कार्य में परिलक्षित होती है। यहाँ हम कुछ प्रमुख कठिनाइयों को उद्धाटित कर रहे हैं, जिससे उन्हें समझकर हम पाण्डुलिपि सम्पादन कार्य में सहायता प्राप्त कर सकें।

1. भौतिक क्षति और अस्पष्टता:

पाण्डुलिपियों की खराब स्थिति: पाण्डुलिपियाँ प्रायः ताड़पत्र, भोजपत्र, या कागज पर लिखी होती हैं, जो समय के साथ क्षतिग्रस्त हो जाती हैं। इनमें मिटे हुए अक्षर, फटे पृष्ठ, या धुंधले निशान हो सकते हैं।

किसी भाग का गायब होना: अनेक बार पाण्डुलिपि के कुछ हिस्से या तो गायब होते हैं या अस्पष्ट होते हैं, जिससे पाठ का पूर्ण अर्थ समझना कठिन हो जाता है।

2. भाषा और लेखनी की समस्याएँ: -

प्राच्य भाषाएँ: पाण्डुलिपियाँ आमतौर पर प्राचीन भाषाओं (जैसे संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, हाडे कन्नड़, मराठी, तमिल) या लिपियों (जैसे ब्राह्मी, शारदा, द्राविड, नागरी) में लिखी होती हैं, जिन्हें समझने के लिए विशेष ज्ञान की आवश्यकता होती है।

विभिन्न लिपियों का प्रयोग: एक ही पाण्डुलिपि में अलग-अलग लिपियाँ हो सकती हैं, जिससे संपादन जटिल होती है।

शब्दों का अस्पष्ट प्रयोग: पाण्डुलिपिकार या कृतिकार द्वारा संक्षिप्त कथन या सूत्र, अज्ञात शब्द और स्थानीय बोलियाँ समझना मुश्किल हो जाता है।

3. संदर्भ और संस्करणों की कमी:

संदर्भ सामग्री का अभाव: संदर्भ सामग्री का अभाव यह एक बड़ी चुनौती होती है, जो कि प्रायः अनेक पाण्डुलिपियों में आती है। संदर्भ ग्रंथ उपलब्ध नहीं होते, जिससे पुनर्निर्माण कठिन हो जाता है।

विभिन्न पाठों में अंतर: एक ही ग्रंथ की अलग-अलग पाण्डुलिपियाँ मिलने पर उनके पाठ में भिन्नताएँ होती हैं, जिससे सही संस्करण चुनना चुनौतीपूर्ण हो जाता है।

4. टेक्नोलॉजिकल और संरक्षण की सीमाएँ:

संरक्षण की समस्याएँ: प्राचीन पाण्डुलिपियों को संरक्षित करना कठिन होता है, क्योंकि वे जलवायु, नमी, और प्रकाश के प्रति संवेदनशील होती हैं।

डिजिटलीकरण की कठिनाई: डिजिटलीकरण के लिए उच्च गुणवत्ता वाले उपकरणों और तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है, जो हमेशा उपलब्ध नहीं होती। यह व्ययसाध्य भी है।

5. समय और संसाधनों की कमी:

संपादन प्रक्रिया में अत्यधिक समय और धैर्य आवश्यकता होती है। विशेषज्ञों और आर्थिक संसाधनों की कमी इस कार्य को और कठिन बना देती है।

इन कठिनाइयों के बावजूद आधुनिक तकनीक और विद्वानों के प्रयासों से पाण्डुलिपियों के संरक्षण और सम्पादन के कार्य में प्रगति हो रही है परंतु यह प्रगति बहुत ही कम है, यदि शासन द्वारा शोध संस्थानों की स्थापना की जाती है तो जो इसी कमी की पूर्ति कर सकते हैं।

✚ पाण्डुलिपि सम्पादन के लिए उपयोगी पुस्तकें -

1. पाण्डुलिपि प्रारंभिक ज्ञान के लिए -

पाण्डुलिपि विज्ञान - यह पुस्तक पाण्डुलिपियों के अध्ययन, संरक्षण और संपादन की विधियों पर विस्तृत जानकारी प्रदान करती है।

पाण्डुलिपियों की क ख ग - प्रगति शर्मा द्वारा रचित यह पुस्तक पाण्डुलिपि अध्ययन के मूलभूत पहलुओं को सरल भाषा में समझाती है, जो विशेषकर विद्यार्थियों के लिए सहायक है।

वेदांत विषयक पाण्डुलिपियों की संपादन-प्रविधि – यह शोधपत्र वेदांत से संबंधित पाण्डुलिपियों के संपादन की विधियों पर केंद्रित है।

प्राकृत साहित्य एवं पाण्डुलिपि संपादन – यह पुस्तक प्राकृत साहित्य और पाण्डुलिपि संपादन की प्रक्रियाओं पर विस्तृत चर्चा करती है, जो इस क्षेत्र के अध्येताओं के लिए उपयोगी है।

2. पाण्डुलिपि सम्पादन पर आधारित पुस्तकें:

- **Introduction to Manuscriptology** – एस. आर. गौड (S. R. Goyal): यह पुस्तक पाण्डुलिपियों की पहचान, उनके संरक्षण और सम्पादन की तकनीकों को स्पष्ट करती है।
- **Indian Paleography** – डी. सी. सिरकार (D. C. Sircar): भारतीय लिपियों के इतिहास और उनके विकास का अध्ययन।
- **Principles of Textual Criticism** – ए. ई. हॉउस (A. E. Housman): पाण्डुलिपियों के सम्पादन के लिए मूलभूत सिद्धांतों को समझाने वाली एक प्रसिद्ध पुस्तक।

3. हस्तलिपि विज्ञान और पाण्डुलिपि संरक्षण:

- **A Handbook of Manuscript Studies** – जॉर्ज पार्कर: पाण्डुलिपियों के अध्ययन और सम्पादन के व्यावहारिक पहलुओं पर।
- **The Care and Conservation of Manuscripts** – क्रिस्टोफर डी हेमैन: पाण्डुलिपियों के संरक्षण और रख-रखाव के तरीके।

4. भारतीय संदर्भ ग्रंथ:

- **Elements of Manuscriptology** – एस.के. सिंह: भारतीय पाण्डुलिपियों के अध्ययन और संपादन के सिद्धांत।
- **संगीतरत्नाकर** – शारंगदेव: पाण्डुलिपियों में संगीत और नाट्यशास्त्र संबंधी सामग्री के सम्पादन में सहायक।

5. आधुनिक अध्ययन और तकनीक:

- **Digital Approaches to Textual Criticism** – ग्रेग मैथ्यूज: डिजिटल तकनीकों से पाण्डुलिपियों का सम्पादन और विश्लेषण।
- **Textual Criticism and Scholarly Editing** – विलियम प्रॉक्टर: आधुनिक सम्पादन पद्धतियों पर केंद्रित।

✚ **निष्कर्ष** -पाण्डुलिपियाँ भारत की सांस्कृतिक धरोहर हैं। भारत को जानना है तो इन पाण्डुलिपियों में निहित ज्ञान ही है जो भारत को भारत की पहचान कराता है। भारतीय संस्कृति की जीवंत प्रतिकृति का अद्वितीय उदाहरण पाण्डुलिपियाँ हैं। इन पाण्डुलिपियों का संरक्षण, संवर्धन और सम्पादन होने से केवल हमें यह न केवल अतीत का सम्मान है, बल्कि भविष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत भी है। यदि हम इन अनमोल धरोहरों को सुरक्षित रखते हैं, तो यह हमारे ज्ञान और संस्कृति को समृद्ध बनाने में सहायक सिद्ध होगी।

पाण्डुलिपि अपनी रक्षा के लिये कहती है -

जलाद्रक्षेत्तैलाद्रक्षेद्रक्षेच्छिथिलबन्धनात्।

मूर्खहस्ते न मां दद्यादिति वदति पुस्तकम् ॥

मुझे जल से, तेल से, ढीले बन्धन (बाइंडिंग) से बचायें। मुझे मूर्ख के हाथ में नहीं थमाना चाहिये - ऐसा पुस्तक का स्वयं का कथन है।

22 दिसम्बर 2024

154, गीतांजलि ग्रीनसिटी,
संजय ड्राइव रोड, सागर म. प्र.

9329092390

aasheishjain@gmail.com

<https://draasheish.blogspot.com/>